❍ 11 / 12 / 22 की मुरली से चार्ट ❍

⇛ TOTAL MARKS:- 100 ⇚

∫∫ 1 ∫∫ होमवर्क (Marks: 5*4=20)

≻≻ *सर्व शक्तियों को आर्डर प्रमाण चलाया ?*

≻≻ *बापदादा से की हुई दृढ़ प्रतिज्ञा को निभाया ?*

≻≻ *"समझना, चाहना और करना" - तीनो को एक समान बनाया ?*

≻≻ *सदा रूहानी स्मृति में रहे ?*

────────────────────────

✧ ° ° ••☆••✧ ° ° ••☆••✧ ° ° ••☆••✧ ° °

☆ *अव्यक्त पालना का रिटर्न* ☆

❂ *तपस्वी जीवन* ❂

✧ ° ° ••☆••✧ ° ° ••☆••✧ ° ° ••☆••✧ ° °

〰✧ *याद में निरन्तर रहने का सहज साधन है - प्रवृत्ति में रहते पर - वृत्ति में रहना। पर - वृत्ति अर्थात् आत्मिक रूप।* ऐसे आत्मिक रूप में रहने वाला सदा न्यारा और बाप का प्यारा होगा। कुछ भी करेगा लेकिन ऐसे महसूस होगा जैसे काम नहीं किया लेकिन खेल किया है। *यह रूहानी नयन, यह रूहानी मूर्त ऐसे दिव्य दर्पण बन जायेंगे जिस दर्पण में हर आत्मा बिना मेहनत के आत्मिक स्वरूप ही देखेगी।*

✧ ° ° ••☆••✧ ° ° ••☆••✧ ° ° ••☆••✧ ° °

∬ 2 ∬ तपस्वी जीवन (Marks:- 10)

➢➢ *इन शिक्षाओं को अमल में लाकर बापदादा की अव्यक्त पालना का रिटर्न दिया ?*

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

———————————————————

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚
☆ *अव्यक्त बापदादा द्वारा दिए गए* ☆
❂ *श्रेष्ठ स्वमान* ❂
✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

✺ *"मैं विजयी रत्न हूँ"*

〰✧ सब विजयी रत्न हो ना? विजय का झण्डा पक्का है ना। *विजय हमारा जन्म सिद्ध अधिकार है।* यह मुख का नारा नहीं लेकिन प्रैक्टिकल जीवन का नारा है।

〰✧ *कल्प-कल्प के विजय हैं, अब की बार नहीं, हर कल्प के, अनगिनत बार के विजयी हैं।* ऐसे विजयी सदा हर्षित रहते हैं। हार के अन्दर दुख की लहर होती है।

〰✧ *सदा विजयी जो होंगे वह सदा खुश रहेंगे, कभी भी किसी सरकमस्टांस में भी दुख की लहर नहीं आ सकती।* दुख की दुनिया से किनारा हो गया, रात खत्म हुई, प्रभात में आ गये तो दुख की लहर कैसे आ सकती? विजय का झण्डा सदा लहराता रहे, नीचे न हो।

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

∬ 3 ∬ स्वमान का अभ्यास (Marks:- 10)

➢➢ *इस स्वमान का विशेष रूप से अभ्यास किया ?*

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

❂ *रूहानी ड्रिल प्रति* ❂

☆ *अव्यक्त बापदादा की प्रेरणाएं* ☆

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

〰✧ *डायमण्ड जुबली वाले क्या करेंगे? लहर फैलायेंगे ना?* आप लोग तो अनुभवी हैं। शुरू का अनुभव है ना! सब कुछ था, देशी घी खाओ जितना खा सकते, फिर भी बेहद की वैराग्य वृति। दुनिया वाले तो देशी घी खाते हैं लेकिन आप तो पीते थे। घी की नदियाँ देखी।

〰✧ तो डायमण्ड जुबली वालों को विशेष काम करना है - *आपस में इकट्ठे हुए हो तो रूहरिहान करना।* जैसे सेवा की मीटिंग करते हो वैसे इसकी मीटिंग करो। जो बापदादा कहते हैं, चाहते हैं *सेकण्ड में अशरीरी हो जायें - उसका फाउण्डेशन यह बेहद की वैराग्य वृत्ति है,* नहीं तो कितनी भी कोशिश करेंगे लेकिन सेकण्ड में नहीं हो सकेंगे।

〰✧ युद्ध में ही चले जायेंगे और *जहाँ वैराग्य है तो ये वैराग्य है योग्य धरनी, उसमें जो भी डालो उसका फल फौरन निकलता।* तो क्या करना है?

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

∬ 4 ∬ रूहानी ड्रिल (Marks:- 10)

➢➢ *इन महावाक्यों को आधार बनाकर रूहानी ड्रिल का अभ्यास किया ?*

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

⁺˚˚ ••☆••✧˚˚ ••☆••✧˚˚ ••☆••✧˚˚

❂ *अशरीरी स्थिति प्रति* ❂

☆ *अव्यक्त बापदादा के इशारे* ☆

⁺˚˚ ••☆••✧˚˚ ••☆••✧˚˚ ••☆••✧˚˚

〰✧ *अपने को फ़रिश्तों की सभा में बैठने वाला फ़रिश्ता समझते हो? फ़रिश्ता अर्थात् जिसके सर्व सम्बन्ध वा सर्व रिश्ते एक के साथ हों। एक से सर्व रिश्ते और सदा एकरस स्थिति में स्थित हों।* एक-एक सेकेण्ड, एक-एक बोल, एक की ही लगन में और एक की ही सेवा प्रति हों। चलते-फिरते, देखते-बोलते और कर्म करते हुए व्यक्त भाव से न्यारे अव्यक्त अर्थात् इस व्यक्त देह रूपी धरनी की स्मृति से बुद्धि रूपी पाँव सदा ऊपर रहे अर्थात् उपराम रहे। *जैसे बाप ईश्वरीय सेवा-अर्थ वा बच्चों को साथ ले जाने की सेवा-अर्थ वा सच्चे भक्तों को बहुत समय के भक्ति का फल देने अर्थ, न्यारे और निराकार होते हुए भी अल्पकाल के लिए आधार लेते हैं वा अवतरित होते हैं ऐसे ही फ़रिश्ता अर्थात् सिर्फ ईश्वरीय सेवा अर्थ यह साकार ब्राह्मण जीवन मिला है।* धर्म स्थापक धर्म स्थापना का पार्ट बजाने के लिए आये हैं- इसलिए नाम ही है शक्ति अवतार-इस समय अवतार हूँ, धर्म स्थापक हूँ। *सिवाये धर्म स्थापन करने के कार्य के और कोई भी कार्य आप ब्राह्मण अर्थात् अवतरित हुई आत्माओं का है ही नहीं। सदा फ़रिश्ता डबल लाइट रूप है। एक लाइट अर्थात् सदा ज्योति स्वरूप, दूसरा लाइट अर्थात् कोई भी पिछले हिसाब-किताब के बोझ से न्यारा अर्थात् हल्का। ऐसे डबल लाइट स्वरूप अपने को अनुभव करते हो?*

⁺˚˚ ••☆••✧˚˚ ••☆••✧˚˚ ••☆••✧˚˚

∫∫ 5 ∫∫ अशरीरी स्थिति (Marks:- 10)

➢➢ *इन महावाक्यों को आधार बनाकर अशरीरी अवस्था का अनुभव किया ?*

⁺˚˚ ••☆••✧˚˚ ••☆••✧˚˚ ••☆••✧˚˚

∬ 6 ∬ बाबा से रूहरिहान (Marks:-10)
(आज की मुरली के सार पर आधारित...)

✺ *"ड्रिल :- प्रत्यक्षता का आधार- दृढ प्रतिज्ञा करना"*

➳ _ ➳ *84जन्म.... 84मात पिता... अनेक मते... जिन पर चलती चलती मैं आत्मा गोरी से काली बन पड़ी... फिर आप आए... इतना निरहंकारीपन, कि स्वयं धोबी बन पड़े...* इस अंतिम जन्म आपके श्रीमत पर चल मैं आत्मा श्याम से सुंदर बन रही हूं बाबा... अब यह महसूसता आती जाती है बाबा, पहले क्या थे! और अब क्या बनते जा रहे हैं... *यह अलौकिक जीवन अच्छा लगने लगा है... अभी ही आपने मुझ आत्मा को... अलौकिक सीट की पहचान कराई... मैं आत्मा भृकुटि के मध्य विराजमान हूं!...* अब कुछ भी हो जाए बाबा यह सीट न छोड़ने की... माया जीत जगतजीत बनने की, 8 माला में आने की, पास विद आनर होने की मुझ आत्मा की दृढ़ प्रतिज्ञा बन गई है... क्योंकि अब इच्छा है तो विजय निश्चित है...

❉ *मीठे बाबा अपनी प्यार भरी गोद में मीठी सी थपकी देते हुए बोलते हैं:- "रूहानी बच्चे... 84 जन्म तुमने 84 बाप बदले... मनमत परमत पर चली हो... अभी इस जन्म जो पिताओं का पिता मिला, अब उसकी मत पर चलो और 21 जन्मों के लिए अविनाशी कमाई जमा करो...* देखो कमाई के समय निंद्रा फिट जाती है, तो अब स्वयं को निंद्रा से मुक्त अब कमाई करो... जागो... *अब समय है तकदीर जगाने का..."*

➳ _ ➳ *मीठे बाबा की गोद में प्यार भरे अनुभव में डूबी मैं आत्मा बाबा से बोली:- "हां मेरे रूहानी बाबा... अब तक तकदीर को लकीर लगी हुई थी....* आत्मा की ज्योति उझाई हुई थी... मगर अब आपकी याद रूपी घृत से मैं आत्मा फिर से जाग उठी हूं... *जीवन पहले जैसी नहीं... अब रातों को सोती हूं तो तुम्हारी ही मीठी यादों में... उठती हूं तो पहले पहले तुम ही याद आते हो..."*

❇ *मीठे बाबा मीठी लाडली मुस्कान देते हुए मुझ आत्मा से बोले:- "लाडली बच्ची... जीवन में बदलाव तो आएगा ही... जितना जितना तुम मेरी याद में रहे श्रीमत पर चल मेरा कहना मानोगी,* बदलाव तो आएंगे ही... बाप भी हर्षित होते हैं तुम्हारे इस नए मरजीवा जीवन को देख... *बाप को भी खुशी होती है बच्चे लायक बन रहे हैं और बाप को क्या चाहिए..."*

➳ _ ➳ *प्यार के सागर की लहरों की गहराइयों में खोते हुए मैं आत्मा बाबा से बोली:- "मीठे बाबा... सच में मैं कितनी ही भाग्यवान आत्मा हूं जो परमात्म दुआओं की पात्र बनी...* स्वयं भगवान मुझ पर हर्षित हो प्यार लुटा रहे हैं, सचमुच बाबा अब यह बदलाव मुझ आत्मा को और ही दृढ़ करता जा रहा है... *सपूत बच्चा बन तुम्हारी आशा को पूरा करने का दीपक ज्वालामुखी रूप ले चुका है... अब नहीं तो कभी नहीं..."*

❇ *मीठे बाबा सन्मुख बैठे शक्तिशाली दृष्टि देते हुए बोले:- "मीठी बच्चे... दुनिया में देखो कैसे, चाहे कोई भी प्राइम मिनिस्टर हो अपनी सीट को छोड़ने नहीं चाहते... विनाशी कुर्सी के लिए कितनी मेहनत करते... अब तुम्हें तो अविनाशी कुर्सी मिली है,* स्मृति आई है मैं आत्मा स्वराज्य अधिकारी हूं, तो अब इस सीट को नहीं छोड़ अविनाशी पद का... भविष्य में चक्रवर्ती महाराजा महारानी बनो..."

➳ _ ➳ *मीठे बाबा की शिक्षाओं को स्वयं में धारण करते मैं आत्मा बाबा से बोली:- "हां मीठे बाबा... अब तो पास विद ऑनर की ट्रॉफी पर नज़र टिकी हुई है...* लक्ष्य सामने है... मैं आत्मा लक्ष्य स्वरूप हो गई हूं... स्मृति सो समर्थी मैं आत्मा स्व के साथ-साथ विश्व की सर्विस भी करती जा रही हूं... *विश्व कल्याणकारी मैं आत्मा स्वयं को एक जिम्मेवार सपूत बच्चे के रूप में देख रही हूं..."*

∬ 7 ∬ योग अभ्यास (Marks:-10)
(आज की मुरली की मुख्य धारणा पर आधारित...)

✺ *"ड्रिल :- सर्व शक्तियों को अपने आर्डर प्रमाण चलाना*"

➳ _ ➳ देह और देह की दुनिया को भूल, एकाग्रता की स्थिति में स्थित होने के लिए मैं अपने मन और बुद्धि को हर संकल्प विकल्प से हटाकर अपना पूरा ध्यान अपने स्वरूप पर केंद्रित करती हूँ और कुछ क्षणों के लिए बाहरी दुनिया से पूरी तरह डिटैच होकर स्थित हो जाती हूँ अपनी सम्पूर्ण निराकारी स्थिति में। *इस स्थिति में मैं स्वयं को अपने सम्पूर्ण सत्य अनादि स्वरूप में भृकुटि के मध्य चमकते हुए एक अति सूक्ष्म सितारे के रूप में देख रही हूँ जिसमे से हल्की - हल्की प्रकाश की रंग बिरंगी किरणे निकल रही हैं। इन रंग बिरंगी किरणों के साथ मुझे मेरे मस्तक से हल्की - हल्की फुहारों के रूप में मेरे सातों गुणों के वायब्रेशन्स भी निकलते हुए अनुभव हो रहें हैं जो मुझे सुख, शांति, आनन्द का अनुभव करवा रहें हैं*।

➳ _ ➳ एकाग्रता की यह स्थिति मुझे मेरे सत्य स्वरुप में स्थित करके, मेरे अंदर समाये उन गुणों और शक्तियों का अनुभव करवा रही है जिनसे मैं आज दिन तक अंजान थी। *देह भान में आकर अपने ध्यान को देह और देह की दुनिया मे भटकाकर मैं कितनी दुखी और अशांत हो गई थी किन्तु आज एकाग्रता की शक्ति द्वारा अपने सर्वगुणों और सर्वशक्तियों से सम्पन्न सम्पूर्ण स्वरूप का अनुभव करके मैं जैसे तृप्त हो गई हूँ*। इस अति न्यारे और प्यारे स्वरूप का आनन्द लेते हुए अब मेरा मन और बुद्धि एक की लगन में मग्न होते जा रहें हैं। *उस एक के अंत मे मैं सहज ही स्थित होती जा रही हूँ जिसके साथ मेरे अनादि सर्व सम्बन्ध है। मेरा वो परम पिता परमात्मा जो दिखने में मेरी ही तरह एक बिंदु है किंतु गुणों में वो सिंधु है*।

➳ _ ➳ अपने उस बिंदु पिता को अब मैं मन बुद्धि के दिव्य नेत्र से निहार रही हूँ। कभी अपने स्वरूप को और कभी उनके स्वरूप को निहारते हुए उनके प्रेम की लगन में मग्न होकर अब मैं उनके पास जा रही हूँ। *संकल्प करते ही मैं स्वयं को लौकिक और अलौकिक दुनिया से परे उस पारलौकिक दुनिया मे देख रही हूँ जहाँ मेरे पिता रहते हैं। सर्वशक्तियों के सागर अपने प्यारे पिता के सानिध्य में बैठ उनसे आ रही सर्वशक्तियों को स्वयं में समाते हुए मैं महसस

कर रही हूँ कि मेरी सोई हुई शक्तियाँ पुनः जागृत हो रही हैं*। अपनी एक - एक शक्ति को मैं विकसित होते हुए स्पष्ट देख रही हूँ। आठों शक्तियों से सम्पन्न मेरा स्वरूप मुझे बहुत ही लुभायमान लग रहा है।

➳ _ ➳ अपने अष्ट शक्ति सम्पन्न स्वरूप में मैं स्वयं को बहुत ही शक्तिशाली अनुभव कर रही हूँ। मेरे अंदर समाई हुई हर शक्ति प्रकाश की अलग - अलग रंग बिरंगी किरणों के रूप में मुझ आत्मा से निकलती हुई ऐसे दिखाई दे रही हैं जैसे कोई बेदाग हीरा चमक रहा है। *अपने प्यारे पिता की सर्वशक्तियों की शीतल छाया के नीचे बैठ, सर्वशक्तियों की प्राप्ति का अनुभव करके, हीरे के समान चमकते हुए अपने सर्वशक्ति सम्पन्न स्वरूप में स्थित होकर अब मैं वापिस साकारी दुनिया मे लौट रही हूँ*। अपने साकार शरीर रूपी रथ पर भृकुटि सिहांसन पर अब मैं फिर से विराजमान होकर सृष्टि रूपी रंगमंच पर पार्ट बजा रही हूँ।

➳ _ ➳ अपने ब्राह्मण जीवन मे अब मैं एकाग्रता की शक्ति द्वारा हर क्षेत्र में सहज ही सफलता प्राप्त करती जा रही हूँ। कभी अपनी एकाग्र स्थिति में स्थित होकर अपने श्रेष्ठ संकल्पो द्वारा विश्व की आत्माओं को दूर बैठे सहयोग देने की सेवा करती हूँ तो कभी एक के अंत मे खोकर एक ही संकल्प में स्थित होकर एक बाप में सर्व प्राप्तियों की अनुभूति सहजता से कर लेती हूँ। *एकाग्रता से सर्व शक्तियों की प्राप्ति का अनुभव करते हुए, हलचल की परिस्थिति में भी अब मैं सेकंड में स्व अभ्यास द्वारा एकांतवासी बन स्वयं को उस परिस्थिति के जाल से सहज ही मुक्त कर लेती हूँ*। एकाग्रता की शक्ति एक के अंत मे सदा खोये रहने के अनुभव को बढ़ा कर मुझे सर्वशक्तियों की प्राप्ति द्वारा माया पर विजय दिलाकर अब हर प्रकार की मेहनत से मुक्त कर सहजयोगी बनाती जा रही है।

∬ 8 ∬ श्रेष्ठ संकल्पों का अभ्यास (Marks:- 5)
(आज की मुरली के वरदान पर आधारित...)

✺ *मैं श्रेष्ठ कर्म और योगी जीवन द्वारा सन्तुष्टता के तीन सर्टिफिकेट लेने वाली आत्मा हूँ।*
✺ *मैं सन्तुष्टमणि आत्मा हूँ।*

➢➢ इस संकल्प को आधार बनाकर स्वयं को श्रेष्ठ संकल्पों में स्थित करने का अभ्यास किया ?

———————————————

∬ 9 ∬ श्रेष्ठ संकल्पों का अभ्यास (Marks:- 5)
(आज की मुरली के स्लोगन पर आधारित...)

✺ *मैं आत्मा याद और सेवा में सदा बिज़ी रहती हूँ ।*
✺ *मैं आत्मा सबसे बड़ी खुशनसीबी प्राप्त करती हूँ ।*
✺ *मैं श्रेष्ठ ब्राह्मण आत्मा हूँ ।*

➢➢ इस संकल्प को आधार बनाकर स्वयं को श्रेष्ठ संकल्पों में स्थित करने का अभ्यास किया ?

———————————————

∬ 10 ∬ अव्यक्त मिलन (Marks:-10)
(अव्यक्त मुरलियों पर आधारित...)

✺ अव्यक्त बापदादा :-

➳ _ ➳ हर गुण वा शक्ति का अनुभव कराने की रिसर्च करो यह बहुत बड़ा ग्रुप है। स्पार्क वाले रीसर्च करते हैं ना! स्पार्क वालों को विशेष यह अटेन्शन में रहे कि जैसे साइन्स प्रत्यक्ष अनुभव कराती है, मानो गर्मी है तो साइन्स के साधन ठण्डी का प्रत्यक्ष अनुभव कराते हैं। ऐसे रीसर्च वालों को विशेष ऐसा प्लैन बनाना चाहिए कि *हर एक जो बाप की या आत्मा की विशेषतायें हैं, ज्ञान स्वरूप, शान्त स्वरूप, आनन्द स्वरूप, शक्ति स्वरूप... इस एक-एक विशेषता

का प्रैक्टिकल में अनुभव क्या होता है। वह ऐसा सहज साधन निकालो जो कोई भी अनुभव करने चाहे तो चाहे थोड़े समय के लिए भी अनुभव कर सके कि शान्ति इसको कहते हैं, शक्ति की अनुभूति इसको कहते हैं। एक सेकण्ड, दो सेकण्ड भी अनुभव कराने की विधि निकालो।* तो एक सेकण्ड भी अगर किसको अनुभव हो गया तो वह अनुभव आकर्षित करता है। *ऐसी कोई इन्वेन्शन निकालो। आपके सामने आवे और जिस विशेषता का अनुभव करने चाहे वह कर सके।* क्या-क्या भिन्न-भिन्न स्थिति होती है, जैसे साधना करने वाले जो साधु हैं वह प्रैक्टिकल में उन्हों को अनुभव कराते हैं, चक्र नाभी से शुरू हुआ फिरऊपर गया, फिर ऊपर जाके क्या अनुभूति होती है। ऐसे आप अपने विधि पूर्वक, मन और बुद्धि द्वारा उनको अनुभव कराओ। लाइट बैठकर नहीं दिखाना है लेकिन लाइट का अनुभव करें।

➳ _ ➳ *रीसर्च का अर्थ ही है - 'प्रत्यक्ष विधि द्वारा अनुभव करना, कराना'। तो ऐसा प्लैन बनाके प्रैक्टिकल में इसकी विधि निकालो।* जैसे योग शिविर की विधि निकाली ना तो टैम्प्रेरी टाइम में योग शिविर में जो भी आते हैं वह उस समय तो अनुभव करते हैं ना! और उन्हों को वह अनुभव याद भी रहता है। ऐसे कोई-न-कोई गुण, कोई-न-कोई शक्ति, कोई-न -कोई अनादि संस्कार, उन्हों की अनुभूति कराओ। तो ऐसी रीसर्च वालों को पहले स्वयं अनुभूति करनी पड़ेगी फिर विधि बनाओ और दूसरों को अनुभूति कराओ। आजकल लोगों को भक्ति में जैसे चमत्कार चाहिए ना, मेहनत नहीं - 'चमत्कार'। ऐसे आध्यात्मिक रूप में अनुभव चाहिए। अनुभवी कभी बदल नहीं सकता। जल्दी-जल्दी अनुभव के आधार से बढ़ते जायेंगे सुना। *अभी नई-नई विधि निकालो। आप कहते जाओ वह अनुभव करते जायें, इसके लिए बहुत पावरफुल अभ्यास करना पड़ेगा।*

✺ *ड्रिल :- "हर गुण वा शक्ति का प्रत्यक्ष विधि द्वारा अनुभव करना और कराना"*

➳ _ ➳ मैं आत्मा मस्तक मणि हूं... भ्रुकुटी में अपने सिंहासन पर विराजमान... *मैं आत्मा अपने इस ब्राह्मण जीवन को देख हर्षित होती हूँ...* बाबा ने मझे अपनाया तो मझे अपने रूप. काल. घर के बारे में पता चला है...

नहीं तो कहां वो कलयुग का शूद्र जीवन और कहाँ यह संगमयुग का ब्राह्मण जीवन... *बाबा ने दुःखों के जाल में फँसी मुझ आत्मा के बंधन काट मुक्त कराया... मुझे मेरा तारणहार मिल गया...* मैं आत्मा नीलगगन में उन्मुक्त पंछी की भांति उड़ान भरती हुई गुनगुना रही हूं... *कि तुम जो मिल गए हो तो जहान मिल गया...*

➳ _ ➳ *पहुँचती हूं अपने घर परमधाम...* जहां चहुँ ओर लाल प्रकाश फैला हुआ है... कितना सुंदर कितना सुनहरा प्रकाश है यह, कितनी शान्ति है यहां... खो जाती हूं मैं इस शांत वातावरण में... इन लाल प्रकाश की किरणों में मैं समा जाती हूँ... *ज्योतिरबिन्दु शिव पिता मुझ को लेकर आते हैं सूक्ष्म वतन में...*

➳ _ ➳ *सामने है मेरे पिता, मेरे ईश्वर, मेरे आराध्य, मेरे परमात्मा , मेरे बापदादा* क्या बोलूं ! कैसे पुकारूँ! नहीं जानती बस इतना ही बोलती हूं... *"मेरे बाबा मेरे प्राण मेरे जीवन मेरी जान"* कब से बिछड़ी हुई थी आपसे... कहाँ थे आप? क्यों मुझे इस दुनिया की भीड़ में अकेला छोड़ दिया? जानते भी हैं? कि कैसे गुजारे मैंने ये बरस, ये सदियां आपके बिना... मेरी ये बातें सुन बाबा को मुझ पर बेहद प्यार आता है... बाबा मेरे सर पर बड़े प्यार से हाथ फिराते हैं... मुझे मनभावनी दृष्टि देते हैं... और मीठी मीठी वाणी में बड़े प्रेम से ड्रामा का राज़ बतलाते हैं... *मैं आत्मा बाबा के प्रेम में डूबने लगती हूं... बाबा के मस्तक से आती सफ़ेद किरणें मेरे अंदर शीतलता भर रही हैं... इन निरंतर आती किरणों के प्रवाह से मैं अपने को बेहद शक्तिशाली अनुभव कर रही हूं... ये किरणों का झरना मुझे पवित्रता से, ज्ञान से, प्रेम से, आनंद से, सर्व शक्तियों से भरपूर कर रहा है।*

➳ _ ➳ *बाबा मुझ आत्मा को गुण और शक्तियों से भरपूर कर रहे हैं... इन गुण शक्तियों को अपने अंदर भर मैं बाप समान बनती जा रही है... मैं अपने को पूरी तरह से तृप्त अनुभव कर रही हैं...* इसके उपरांत मैं बाबा से विदाई लेकर वापिस आती हूं... *बाबा से मिले गुण शक्तियों और वरदानों के निरंतर अभ्यास ने मुझे बहुत दिव्य और अलौकिक बना दिया है...*

➳ ➳ अनभव करती हं कि मेरा प्रभामंडल अन्य आत्माओं को आकर्षित

करने लगा है... *मुझ आत्मा में भरा बाबा का स्नेह उन्हें चुम्बक की तरह आकर्षित कर रहा है उस स्नेह को पाने के लिए सब मेरी ओर खिंचीं चली आ रही हैं...* दिव्य गुणों शक्तियों को धारण कर मैं आत्मा अपने संबंध सम्पर्क में आने वाली अन्य आत्माओं को भी सुख, शांति, प्रेम व आनन्द को दे रही हूं... *मेरी बाप समान पवित्र दृष्टि पड़ते ही वे एक अलग ही आनंद में डूब रही हैं... शान्ति के सागर में लहरा रही हैं... इस सुख, शान्ति की अनुभूति होते ही सभी अपने आप को बेहद भाग्यवान महसूस कर रही हैं... जैसे डूबती किश्ती को किनारा मिल गया...* मैं भी बाबा से मिले इस अखुट ख़जाने को पाकर और बांटकर असीम शान्ति और खुशी का अनुभव कर रही हूं... *"धन्यवाद मेरे प्यारे बाबा, मेरे मीठे मीठे बाबा"* आपका भी जवाब नहीं! कैसे अपने सब बच्चों के कल्याण का कार्य करते हो... "वाह मेरे करनकरावनहार बाबा..."

⊙_⊙ आप सभी बाबा के प्यारे प्यारे बच्चों से अनुरोध है की रात्रि में सोने से पहले बाबा को आज की मुरली से मिले चार्ट के हर पॉइंट के मार्क्स ज़रूर दें ।

♔ ॐ शांति ♔